International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
Received: 03-09-2019; Accepted: 05-10-2019
www.educationjournal.in
Volume 4; Issue 6; November 2019; Page No. 11-13

अधिगम का स्वरूप, विशेषताएँ एवं अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक

डॉ. मुकेश कुमार
सहायक प्रोफेसर, एल.एन.टी. शिक्षण महाविद्यालय पानीपत, हरियाणा, भारत

सारांश
सीखना एक निरन्तर चलने वाली सार्वभौमिक प्रक्रिया है। सीखने की यह प्रक्रिया जन्म से मृत्युपर्यन्त अनवरत रूप से चलती रहती है। सीखने की इस प्रक्रिया को अधिगम भी कहते हैं। सीखना मानव जीवन की कुंजी है। सीखने के फलस्वरूप ही व्यक्ति अपने व्यवहार का परिष्कार करता है। वुडवर्थ, गेट्स, स्किनर, गिलफोर्ड, क्रो और क्रो आदि विचारकों ने अधिगम को अपने–अपने अनुसार परिभाषित किया है। अधिगम की अनेक विशेषताएँ हैं जैसे अधिगम विकास है, समायोजन है, अनुभवों का संगठन है, सोद्देश्य है, विवेकपूर्ण व सृजनशील है, क्रियाशील है, व्यक्तिगत व सामाजिक दोनों है, यह वातावरण के परिणामस्वरूप होता है तथा यह व्यक्ति के आचरण को प्रभावित करता है। अधिगम मुख्य रूप से तीन प्रकार का है जैसे – शाब्दिक अधिगम, गत्यात्मक अधिगम तथा समस्या–समाधान अधिगम। अधिगम को प्रभावित करने वाले निम्नलिखित कारक हैं जैसे – पूर्व अधिगम, विषयवस्तु शारीरिक स्वास्थ्य व परिपक्वता, मानसिक स्वास्थ्य व परिपक्वता, अधिगम की इच्छा, प्रेरणा, थकान, वातावरण और सीखने की विधि। अतः उपर्युक्त आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षा मनोविज्ञान का सम्भवतः सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रकरण अधिगम है। अधिगम से तात्पर्य अनुभव, अभ्यास तथा प्रशिक्षण के द्वारा व्यक्ति के व्यवहार में होने वाले परिवर्तन या परिमार्जन से है। इसके अनेक प्रकार, अनेक विशेषताएँ एवम् अधिगम को प्रभावित करने वाले अनेक कारक हैं।

मूल शब्द: सीखना, शिक्षा, मनोविज्ञान, प्रभावित

प्रस्तावना
सीखना एक निरन्तर चलने वाली सार्वभौमिक प्रक्रिया है। व्यक्ति जन्म से ही सीखना प्रारंभ कर देता है तथा मृत्युपर्यन्त कुछ न कुछ सीखता रहता है। परिस्थिति तथा आवश्यकता के अनुरूप सीखने की गति घटती–बढ़ती रहती है। सीखने के लिए कोई स्थान विशेष निश्चित नहीं होता है। व्यक्ति कहीं भी, किसी भी समय, किसी से भी सीख सकता है। सीखने को अधिगम भी कहते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में सीखने तथा अधिगम को पर्यायवाची शब्दों के रूप में प्रयुक्त किया गया है। सीखने का मानव जीवन में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है। व्यक्ति जो भी व्यवहार करता है अथवा नहीं करता है, उसका अधिकांश भाग सीखने से अथवा सीखने की प्रक्रिया से प्रभावित रहता है। वास्तव में सीखना मानव जीवन की कुंजी है। सीखने के फलस्वरूप ही व्यक्ति अपने व्यवहार का परिष्कार करता है। सीखने अथवा अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है जिसे न केवल शिक्षा मनोविज्ञान में वरन् मनोविज्ञान की समस्त शाखाओं में एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है **वुडवर्थ** के अनुसार सीखने के प्रकरण को मनोविज्ञान के क्षेत्र में सबसे अधिक आधारभूत माना जाता है। वास्तव में शिक्षा प्रक्रिया का एक आवश्यक तथा महत्त्वपूर्ण अंग सीखना तथा सिखाना ही है। शिक्षा मनोविज्ञान में तो सीखने की प्रक्रिया को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। कुछ जन्मजात प्रवृत्तियों तथा सहज प्रतिक्रियाओं के अतिरिक्त मनुष्य के अन्य समस्त व्यवहार सीखे हुए होते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में अधिगम की चर्चा की गई है।

अधिगम का प्रत्यय
अधिगम' या 'सीखना' वैसे तो एक सामान्य बोलचाल में प्रयुक्त होने वाला शब्द है तथा लगभग सभी व्यक्ति सीखने शब्द के अर्थ को समझते होंगे। परंतु मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से इस प्रश्न पर विचार करना उपयुक्त होगा कि 'अधिगम' शब्द से क्या अभिप्राय है? निःसंदेह अधिगम से अभिप्राय अनुभवों के द्वारा व्यवहार में परिवर्तन लाने की प्रक्रिया से है। परंतु अधिगम अर्थात् सीखना शब्द का अर्थ मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तुत की गई परिभाषाओं के अवलोकन से अधिक स्पष्ट हो सकेगा। इसलिए अधिगम की कुछ परिभाषायें आगे दी जा रही हैं –

वुडवर्थ के अनुसार – "नवीन ज्ञान तथा नवीन प्रतिक्रियाओं का अर्जन करने की प्रक्रिया अधिगम प्रक्रिया है।"
गेट्स के शब्दों में – "अनुभव तथा प्रशिक्षण के द्वारा व्यवहार का उन्नयन अधिगम है।"
स्किनर के अनुसार – "अधिगम व्यवहार में उत्तरोत्तर अनुकूलन की एक प्रक्रिया है।"
गिलफोर्ड ने कहा है कि – "व्यवहार के कारण व्यवहार में आया कोई भी परिवर्तन अधिगम है।"
क्रो एवं **क्रो** के अनुसार – "आदतों, ज्ञान तथा अभिवृत्तियों का अर्जन ही अधिगम है।"

अधिगम की विशेषताएं
अधिगम की प्रक्रिया को अच्छी तरह से समझने के लिए इसकी विशेषताओं को समझना आवश्यक है। मनोवैज्ञानिक द्वय यॉकम तथा सिम्पसन ने अधिगम की निम्नांकित सामान्य विशेषताओं की चर्चा की है –

(i) अधिगम विकास है।
(ii) अधिगम समायोजन है।
(iii) अधिगम अनुभवों का संगठन है।
(iv) अधिगम सोद्देश्य है।
(v) अधिगम विवेकपूर्ण व सृजनशील है।
(vi) अधिगम क्रियाशील है।
(vii) अधिगम व्यक्तिगत व सामाजिक दोनों है।
(viii) अधिगम वातावरण के परिणामस्वरूप होता है।
(ix) अधिगम व्यक्ति के आचरण को प्रभावित करता है।

अधिगम के प्रकार

अधिगम को अनेक प्रकारों में विभक्त किया जा सकता है जिनमें से तीन प्रमुख प्रकार – शाब्दिक अधिगम, गत्यात्मक अधिगम तथा समस्या–समाधान अधिगम हैं।

शाब्दिक अधिगम से तात्पर्य शब्द भण्डार, भाषा कौशल तथा भाषायी विषयवस्तु पर आधारित विषयवस्तु को सीखने से है। गत्यात्मक अधिगम से अभिप्राय शरीर के विभिन्न अंगों के संचालन में तथा शारीरिक कौशलों में निपुणता अर्जित करने से है। नृत्य करना, कार चलाना, घुड़सवारी करना, व्यायाम करना आदि गत्यात्मक कौशल के उदाहरण हैं। समस्या–समाधान अधिगम के अंतर्गत जीवन में आने वाली विभिन्न प्रकार की नवीन समस्याओं का समाधान करने के तरीकों को सीखना समाहित रहता है।

अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक

अधिगम की प्रक्रिया अनेक कारकों से प्रभावित हो सकती है। अधिगम को प्रभावित करने वाले कुछ प्रमुख कारकों का वर्णन आगे किया गया है –

1. पूर्व अधिगम

बालक कितनी शीघ्रता से अथवा कितनी अच्छी तरह से सीखता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह पहले से क्या सीख चुका है। नवीन अधिगम की प्रक्रिया शून्य से प्रारंभ नहीं होती है वरन् बालक द्वारा पूर्व अर्जित ज्ञान से प्रारंभ होती है। बालक के ज्ञान की आधारशिला जितनी सुदृढ़ तथा व्यापक होती है, उसके ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया उतनी ही अधिक सुचारु ढंग से चलती है। अतः अध्यापकों को 'ज्ञात से अज्ञात की ओर' के शिक्षण सिद्धांत के अनुरूप शिक्षण कार्य करना चाहिए।

2. विषयवस्तु

अधिगम की प्रक्रिया पर सीखी जाने वाली विषयवस्तु का भी प्रभाव पड़ता है। कठिन व असार्थक बातों की अपेक्षा सरल व सार्थक बातों को बालक अधिक शीघ्रता व सुगमता से सीख लेता है। विषय सामग्री की व्यक्तिगत उपादेयता भी सीखने में महत्त्वपूर्ण योगदान करती है। यदि सीखने वाली विषय सामग्री बालक के लिए व्यक्तिगत उपयोग तथा महत्त्व रखती है तो बालक उसे सरलता से सीख लेता है। अतः बालक के जीवन से संबंधित तथा महत्त्वपूर्ण विषयसामग्री को पाठ्यक्रम में प्रमुख स्थान दिया जाना चाहिए।

3. शारीरिक स्वास्थ्य व परिपक्वता

शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ व परिपक्व बालक सीखने में रुचि लेते हैं। जिससे वे शीघ्रता से नवीन बातों को सीख लेते हैं। इसके विपरीत कमजोर, बीमार व अपरिपक्व बालक सीखने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। छोटी कक्षाओं में पढ़ने वाले बालकों के लिए शारीरिक स्वास्थ्य व परिपक्वता का विशेष महत्त्व है जिससे वे पुस्तक, कलम, कापी आदि ठीक ढंग से पकड़ सकें। इसलिए बालकों के शारीरिक स्वास्थ्य व परिपक्वता के अनुरूप ही उन्हें नवीन बातें सिखानी चाहिए।

4. मानसिक स्वास्थ्य व परिपक्वता

मानसिक रूप से स्वस्थ व परिपक्व बालकों में सीखने की क्षमता अधिक होती है। अधिक बुद्धिमान बालक कठिन बातों को शीघ्रता से तथा सरलता से सीख लेता है मानसिक रोगों से पीड़ित या कम बुद्धि वाले बालक मन्दगति से नवीन बातों को सीख पाते हैं। बड़ी कक्षाओं में पढ़ने वाले छात्रों के सीखने में उनकी बुद्धि तथा मानसिक परिपक्वता का विशेष महत्त्व होता है।

5. अधिगम की इच्छा

अधिगम सीखने वाले की इच्छा पर भी निर्भर करता है। यदि बालक में किसी बात को सीखने की दृढ़ इच्छा शक्ति होती है तो वह प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उस बात को सीख लेता है। इसके विपरीत यदि कोई बालक किसी बात को सीखना ही नहीं चाहता है तो उसे जबरदस्ती सिखाया नहीं जा सकता है। अतः बालकों को सिखाने से पहले अध्यापकों व अभिभावकों को उनमें दृढ़ इच्छा शक्ति को उत्पन्न करना चाहिए।

6. प्रेरणा

प्रेरणा का अधिगम की प्रक्रिया में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है। यदि बालक सीखने के लिए प्रेरित नहीं होता है तो वह सीखने के कार्य में रुचि नहीं लेता है। अतः अध्यापकों को चाहिए कि सीखने से पहले बालकों को सीखने के लिए प्रेरित करे। प्रशंसा व प्रोत्साहन के द्वारा प्रतिद्वन्द्विता व महत्त्वाकांक्षा की भावना उत्पन्न करके बालकों को प्रेरित करे।

7. थकान

थकान सीखने की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न करती है। थकान की स्थिति में बालक पूर्ण मनोयोग से सीखने की क्रिया में रत नहीं हो पाता है तथा उसका ध्यान विकेन्द्रित होता रहा है जिससे सीखना संदिग्ध हो जाता है। प्रातःकाल बालक स्फूर्ति से युक्त रहते हैं जिसके कारण प्रातःकाल में सीखने से सुगमता रहती है। धीरे–धीरे बालकों की स्फूर्ति में शिथिलता आती जाती है जिसके कारण बालकों की सीखने की गति मन्द होती जाती है। अतः बालकों के पढ़ने की समय–सारणी बनाते समय विश्राम की व्यवस्था रखने का भी ध्यान रखना चाहिए।

8. वातावरण

अधिगम की प्रक्रिया पर वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है। शान्त, सुविधाजनक, नेत्रप्रिय, उचित प्रकाश तथा वायु वाले वातावरण में बालक प्रसन्नता से व एकाग्रचित्त होकर सीखता है। इसके विपरीत शोरगुल अनाकर्षक तथा असुविधाजनक वातावरण में बालक के सीखने की प्रक्रिया मन्द हो जाती है। ऐसे वातावरण में बालक जल्दी ही थकान का अनुभव करने लगता है। अतः अभिभावकों, अध्यापकों तथा प्राचार्यों को घर, कक्षा व विद्यालय के अंदर सीखने में सहायक वातावरण तैयार करने का प्रयास करना चाहिए।

9. सीखने की विधि

सीखने की विधि का भी अधिगम की क्रिया में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। कुछ विधियों से सीखा ज्ञान अधिक स्थायी होता है। खेल विधि या करके सीखना विधि जैसी मनोवैज्ञानिक से आधुनिक विधियों से ज्ञान शीघ्रता व सुगमता से प्राप्त किया जाता है तथा यह ज्ञान अधिक स्थायी होता है। इसके विपरीत अमनोवैज्ञानिक विधियों से यदि बालकों को जबर्दस्ती सिखाया जाता है तो बालक सीखने में रुचि नहीं लेता है। अतः बालकों को सिखाते समय उपयुक्त विधि का चयन करना चाहिए।

निष्कर्ष

शिक्षा मनोविज्ञान का सम्भवतः सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रकरण अधिगम है। अध्यापकों का मुख्य कार्य छात्रों में वांछित अधिगम को शीघ्र, सहज तथा स्थायी बनाने में सहायता करना है। अधिगम को सीखना भी कहते हैं। अधिगम से तात्पर्य अनुभव, अभ्यास तथा प्रशिक्षण के द्वारा व्यक्ति के व्यवहार में होने वाले परिवर्तन या परिमार्जन से है। अधिगम वास्तव में एक प्रक्रिया है जो निरंतर चलती रहती है। सकारात्मक अधिगम को बढ़ाने तथा नकारात्मक अधिगम को कम करने का प्रयास किया जाता है।

अधिगम को अनेक कारक प्रभावित कर सकते हैं। पूर्व अधिगम, विषयवस्तु की प्रकृति, शारीरिक स्वास्थ्य व परिपक्वता, मानसिक स्वास्थ्य व परिपक्वता, बुद्धि सीखने की इच्छा, प्रेरणा, उत्साह, थकान, वातावरण, सीखने की विधि कुछ ऐसे प्रमुख कारक हैं जो अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. पाठक, पी.डी., शिक्षा मनोविज्ञान, पृ. 112
2. कुलश्रेष्ठ, एस.पी., शिक्षा मनोविज्ञान, पृ. 42
3. वशिष्ठ, डॉ. राजेश कुमार, उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, पृ. 37
4. सिंह, अरुण कुमार, शिक्षा मनोविज्ञान, पृ. 109
5. गुप्ता एवं गुप्ता, शिक्षा मनोविज्ञान, पृ. 188